''पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन''

शोध प्रारूप

(पीएच.डी.उपाधि हेतु)

2023

विश्वविद्यालय (भूगोल विभाग)

सामाजिक विज्ञान संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशक
डॉ.अजय कुमार शर्मा
(सहायक प्राध्यापक)
भूगोल विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
ईमेलः ajaykumarsharmaejdj@gmail.com
मो.नं.: 8789526735

शोधार्थी
रेशमा परवीन
एम.ए., यू.जी.सी.नेट (भूगोल)
मो०नं०–6204299136
9304960515
ईमेलः reshmaperween1985@gmail.com

- **शोधकर्ता का नाम एंव पता (वर्तमान एंव स्थायी पता)**

रेशमा परवीन

एम.ए.भूगोल, यू.जी.सी. नेट, दिसम्बर 2018

कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा

वर्तमान पता :–

रेशमा परवीन

रोड नं.–1 रहमतनगर, नियर फिरदौसिया मस्जिद,

सरायकेला–खरसावां,

पिन–832110

मोबाइल नं. – 9304960515
6204299136

ईमेल–reshmaperween1985@gmail.com

स्थायी पता :–

रेशमा परवीन,
पिता– मोहम्मद इलियास
ग्राम– गंगाडीह म.सं.–07डी, पोस्ट ऑफिस–हल्दीपोखर
थाना–कोवाली, जिला–पूर्वी सिहंभूम, झारखण्ड–831002

- **शोध निर्देशक** :–

डॉ. अजय कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
फोन नं.– 8789526735
ईमेल–ajaykumarsharmaejdj@gmail.com

1. शोध शीर्षकः–

पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

2. शोध शीर्षक का संक्षिप्त परिचय :–

प्रस्तुत शोध का विषय है, पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, जिसके अन्तर्गत औद्योगीकरण के कारण कृषि में हुए परिवर्तन संबंधी जानकारी देना है। पूर्वी सिंहभूम जिला में आरंभिक समय में औद्योगिकीकरण से पूर्व जीवन निर्वाह कृषि तथा झूम कृषि का प्रचलन था। कुछ समय पश्चात् यहाँ पर वर्षा आधारित मानसूनी कृषि की जाने लगी। औद्योगीकरण के पश्चात् यहाँ की कृषि पर उद्योगों का प्रभाव बढ़ने लगा जिस कारण कृषि के वर्तमान प्रारूप में परिवर्तन होने लगा। उद्योगों के कारण मिट्टी की उर्वर क्षमता पर भी प्रभाव पड़ने लगा और कृषि प्रारूप में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा। पूर्वी सिंहभूम जिला में वर्तमान समय में बागाती कृषि का प्रचलन है। अब यहाँ लगभग सभी ऋतुओं में सब्जी एवं फलों आदि की कृषि होने लगी है। इस प्रकार पूर्वी सिंहभूम जिला में कृषि पद्धति में उद्योगों के कारण परिवर्तन देखने को मिलता हैं।

3. अध्ययन क्षेत्र की अद्यतन स्थिति :–

कृषि सम्पूर्ण मानव जगत के जीवन का मुख्य आधार है। मानव और जीव–जन्तु को स्वच्छ, पोषक और पर्याप्त भोजन की आपूर्ति करके यह सम्पूर्ण संसार का संचालन करती है। भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है। इसीलिए भारत को कृषि प्रधान देश भी कहा जाता है। इसका मूल कारण है कि यहाँ की सर्वाधिक जनसंख्या का संबंध कृषि से है। झारखण्ड राज्य भी भारत का एक कृषि प्रधान राज्य है जहाँ कृषि के

साथ उद्योगों का भी संकेंद्रण देखने को मिलता है। जैसे जमशेदपुर में प्रमुखतः लोहा इस्पात उद्योग, टिस्को, घाटशिला में हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड, जादूगोड़ा में यूरेनियम खनन उद्योग यू.सी.आई.एल. स्थापित है। फलतः कृषि एवं उद्योगों के मध्य एक विशिष्ट प्रकार का अन्तर्संबंध पूर्वी सिंहभूम जिला में पाया जाता है। जिसका अध्ययन समीचीन है।

कृषि एवं उद्योगों पर साहित्य के रूप में उपलब्ध पुस्तकों एंव शोध ग्रंथो को इस प्रकार से देखा व विश्लेषित किया जा सकता है।

''वी.आर.सिंह (1959), मो0 शफी (1965), के. जेड. अंसारी (1968), के. जेड. अहमद (1968), एस.एन. मुखर्जी (1968), बी. एस.नेगी (1972), ने फसल प्रतिरूप में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के कारण तथा आवश्यकता का वर्णन किया है।''[1]

''मो.शफी (1960), बी.एन.सिन्हा (1968), पी. सी. अग्रवाल (1970), क्यू.एम. अहमद (1971), ने भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि गहनता तथा उत्पादकता का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है।''[2]

एच. सिंह (1963), एम.एफ.सिद्दीकी (1967), एन.पी अय्यर (1965), मो. हुसैन (1972), ने भारत के शस्य संयोजन, फसलों का संकेंद्रण एवं विविधता, कृषि नियोजन, कृषि एंव पोषाहार आदि विषयों पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों को संदर्भित करके इनके कारणों तथा प्रभावों का विवरण प्रस्तुत किया है।''[3]

जे. आर. डी. टाटा के चेयर प्रोफेसर अनिरूद्ध प्रसाद (2010) ने अपने शोध–पत्र ''आद्य–औद्योगीकरण के माध्यम से जनजातीय समाज का परिवर्तनः झारखण्ड का एक केस अध्ययन'' में विशेष कर पूर्वी सिंहभूम के जनजातीय समाज पर औद्योगीकरण के प्रभाव से उनमें होने वाले आर्थिक परिवर्तन का वर्णन किया है ।

राँची विश्वविद्यालय की ''रेशमा रेनी तोपनो (2016) और डॉ0 जयश्री शाहदेव (2016), ने अपने शोध–प्रपत्र ''राँची जिला में शस्य गहनता का वितरण प्रतिरूप ''में वर्तमान परिपेक्ष्य में कृषि समस्याओं के निवारण द्वारा इस क्षेत्र को उच्च शस्य गहनता के क्षेत्र में बदले जाने का महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत की हैं।''[4]

राँची विश्वविद्यालय के ''डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार सिंह (2016) ने अपने शोध–पत्र ''सतत विकास हेतु झारखण्ड के उद्योगों एवं खनिज सम्पदा में स्थानीय निवासियों की सहभागिता'' में विशेष रूप से बोकारो और दुमका जिले का वर्णन किया है।''[5]

व्याख्याता चीतरपुर कॉलेज, रामगढ़ की डॉ0 रेखा चौधरी (2016) ने अपने शोध–पत्र ''औद्योगीकरण का नगरीय विकास पर प्रभावः जमशेदपुर एवं राँची नगर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' में औद्योगीकरण के पश्चात् किस प्रकार नगरों का विकास कृषि योग्य भूमि पर होने लगा तथा कृषि भूमि उपयोग में क्या परिवर्तन आए तथा कृषि पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया है।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के प्रकाश चन्द्र देवघरिया (2017) ने अपने शोध–पत्र ''झारखण्ड में सब्जी विपणनः चयनित सब्जियों के विपणन योग्य और विपणन अधिशेष का एक सुक्ष्म अध्ययन'' में पूर्वी सिंहभूम जिला के पटमदा प्रखण्ड के सब्जी विपणन का वर्णन प्रस्तुत किया है ।

विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के प्रकाश चन्द्र देवघरिया (2018) ने अपने शोध–पत्र ''झारखण्ड के कृषि का विविधीकरणः प्रक्रिया, पैटर्न और मुद्दे'' में झारखण्ड में कृषि क्षेत्र और कृषि का विविधीकरण के अन्तर्गत उच्च भूमि में फसल विविधीकरण, पशुपालन तथा पशुधन उत्पादन का वर्णन किया है ।

महिला कॉलेज, ए.एम.यू अलीगढ़ के डॉ0 निगार आलम (2019) ने अपने शोध–पत्र '' सिंहभूम क्षेत्र में जनजातियों की व्यवसायिक–संरचना पर औद्योगीकरण और खनन का प्रभाव'' में जो जनजातीय समुदाय कृषि तथा कृषि संबंधित व्यवसाय से जुड़े थे उन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया है ।

सी. जे. हिलवेयर ने अपनी पुस्तक ''कृषि, कुटीर उद्योग, सेरीकल्चर'' में कृषि से उत्पादित वस्तुओं का कुटीर उद्योग के रूप में प्रयोग को दर्शाया है। ऐरी बोर्ड ने अपनी पुस्तक ''मार्डन स्माल एंड कॉटेज स्केल इंडस्ट्रीज'' में कुटीर उद्योग के महत्व को बताया है।

पावला सीमान्स ने अपनी पुस्तक ''ट्यूनिंग वूल इंटू ए कॉटेज इंडस्ट्री'' में कुटीर उद्योग को रोजगार के साधन के रूप में तथा ग्रामीण क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण उद्योग माना है।

जे.पी. मिश्रा (2019) ने अपने आलेख ''किसानों की आय बढ़ाने में सहायक कृषि उद्योग'' में कृषि उद्योग के विकास में मदद करने वाली नीतियों का वर्णन किया है।

शिव कुमार और छत्रपाल सिंह (2019) के प्रकाशित आलेख ''सम्भावनाओं से भरपूर कृषि–आधारित उद्योग'' में उल्लेख किया है कि किस प्रकार कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण इलाकों में रोजगार के साथ–साथ औद्योगिक संस्कृति को बढ़ावा देने में मददगार होगी।

डॉ. के. के. त्रिपाठी (2019) ने अपनी आलेख ''भारत में कृषि आधारित उद्योगों का अवलोकन'' में सरकारी पहल की समीक्षा, कृषि–आधारित उद्योगः मुद्दों और समस्याओं की समीक्षा को दर्शाया है।

सतीश सिंह (2019) ने अपने आलेख ''कृषि आधारित उद्योगों को प्रोत्साहन'' में विभिन्न सरकारी पहल का उल्लेख किया है।

डॉ. इशिता जी. त्रिपाठी (2019) ने अपने आलेख ''कृषि आधारित उद्योगः चुनौतियाँ और समाधान'' में सरकारी हस्तक्षेप, अनुचित व्यापार नियम और व्यापार सम्बंधी नियमन का उल्लेख किया है।

जमशेदपुर वीमेंस कॉलेज की डॉ. शुक्ला महंती (2020) ने अपने शोध–पत्र '' झारखंड के सब्जी किसानों की समस्याएँ : झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिला के पटमदा प्रखंड का एक केस अध्ययन'' में औद्योगीकरण के पश्चात् पटमदा प्रखंड के सब्जी कृषकों के समक्ष आने वाली समस्याओं का उल्लेख किया है।

करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर के डॉ0 मोहम्मद रेयाज (2021) ने अपने शोध–पत्र ''झारखंड के आर्थिक विकास के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग को फिर से उन्मुख करना'' में सिंहभूम क्षेत्र के उधोग तथा कृषि–उद्योगों के उन्मुखीकरण का वर्णन किया है।

ई.आई.ए. समन्वयक श्री विशाल स्कारिया ने मेकॉन लिमिटेड, भारत सरकार का संस्थान द्वारा जारी अपने कार्यकारी सारांश (2017) में पूर्वी सिंहभूम जिला के जमशेदपुर प्रखंड के अन्तर्गत आने वाले नरवापहाड़ यूरेनियम खदान के प्रस्तावित विस्तार के आलोक में पूर्वी सिंहभूम में पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभाव आकलन और पर्यावरण प्रबंधन योजना का वर्णन किया है ।

मनोज चौधरी (2023) ने नाबार्ड द्वारा जारी अपने आलेख में झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम जिला के बोड़ाम प्रखंड में किसानों के द्वारा फसल की कृषि के स्थान पर इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम को अपना कर उनकी आर्थिक स्थिति के उत्थान का वर्णन किया है ।

उपरोक्त शोध साहित्यों, पुस्तकों एवं शोध ग्रंथों के विश्लेषण के पश्चात प्रस्तुत शोध शीर्षक पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभाव के परिपेक्ष्य में विश्लेषण का प्रयास है। पूर्वी सिंहभूम जिला में उद्योग की स्थापना से पूर्व कर्तन–दहन विधि से कृषि की जाती थी। जिसके अन्तर्गत अपनी जरूरत के अनुसार कृषक साग–सब्जी तथा खाद्य–फसल एवं चारा उगा कर अपनी जीवन निर्वाह करते थे। धीरे–धीरे जनसंख्या मे वृद्धि होने लगी और भूमि–प्रतिरूप में बदलाव होता गया। कृषि योग्य भूमि पर दूसरे कार्य किए जाने लगे। और यहाँ वर्षा आधारित कृषि की जाने लगी। जिसमें वर्ष में एक या दो फसल प्राप्त की जाती थी। क्योंकि सिंचाई तथा अन्य कृषिगत साधनों का अभाव था।

अध्ययन क्षेत्र में औद्योगीकरण की शुरूआत 1907 से 1911 के मध्य मानी जाती है। जब जमशेदपुर (साकची) में लौह एवं इस्पात उद्योग की स्थापना हुई। जिसके साथ–साथ यहाँ जनसंख्या संकेंद्रण बढ़ने लगा और नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्रगति से होती चली गई। यहाँ की कुल जनसंख्या की ग्रामीण प्रतिशतता 44.44 और नगरीय प्रतिशतता 55.66 (जनगणना 2011 के अनुसार) है। तीव्र औद्योगीकरण के कारण यहाँ वृहद, लघु एवं कुटीर उद्योगों का व्यापक विकास होता चला गया। जिसका प्रभाव

व्यापक पैमाने पर कृषि तथा कृषकों पर पड़ा। वर्तमान में खाद्य फसल की कृषि केवल मानसून में की जाती है। बाकी समय में कृषक साग–सब्जी उगाते हैं। तथा अन्य जीविका के साधन से अपना जीवन यापन करते हैं। तथा आस पास केंद्रित उद्योगों में मजदूरी का कार्य कर अपना जीवन यापन करते हैं।

4. अनुसंधान की जाने वाली समस्या :–

अध्ययन किए जाने वाले विषय को समस्या का अनुसंधान कहा जाता है। अध्ययन के विषय के अनुसार शोध समस्याएँ अलग–अलग होती हैं तथा यह समस्याएँ प्रश्नों के रूप में होती हैं। आर्थिक भूगोल से संबंधित तथ्यों के पुनर्निरीक्षण एवं उपलब्ध साहित्यों की समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शोध समस्याएँ हैं –

1. औद्योगीकरण का कृषि भूमि की उर्वरता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
2. कृषि भूमि पर उद्योगों के अतिक्रमण से कृषि उत्पादन में कमी की समस्या है ?
3. औद्योगीकरण के कारण कृषि गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
4. औद्योगीकरण के कारण कृषकों में पलायन की समस्या है ?
5. औद्योगीकरण कृषि – आर्थिकी को तथा कृषकों के आर्थिक स्थिति को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है ?
6. अध्ययन क्षेत्र में औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न समस्याएँ तथा कृषि संबंधित क्या–क्या समस्याएँ हैं ?

5. अनुसंधान और प्रेरणा का उद्देश्य :–

शोध कार्य का उद्देश्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मानव कल्याण एवं ज्ञान का विस्तार है। ज्ञान जन–जागरूकता के नवीन प्रवृति के खोज के लिए होता है। इसके मूल्यांकन व अनुसरण द्वारा जनता को लाभ पहुँचाया जा सकता है। इसलिए हमें शोधकर्ता के रूप में शिक्षा तथा ज्ञान का प्रचार तथा प्रसार अपने शोध–कार्य के माध्यम से करना चाहिए। शिक्षा तथा ज्ञान के माध्यम से स्वयं प्रेरित होकर समाज के लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए।

प्रस्तुत शोध–कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. अध्ययन क्षेत्र में कृषि भूमि–उपयोग तथा भूमि उर्वरता का अध्ययन करना।
2. कृषि उत्पादन में कमी के कारणों का अध्ययन करना।
3. कृषि गुणवत्ता पर पड़ने वाले कारकों का अध्ययन करना।
4. कृषकों के पलायन संबंधी समस्याओं का अध्ययन करना।
5. कृषि–आर्थिकी पर औद्योगीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।
6. औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न कृषि संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना ।

6. शोध परिकल्पना :–

शोध का आरंभ समस्याओं से होता है और समस्याओं से ही परिकल्पना जुड़ी होती है। परिकल्पनाएँ, अवलोकन एवं प्रयोग की ओर नए कदम के लिए अग्रसर होने को प्रेरित करती हैं। उपलब्ध तथ्यों के अवलोकन में नए तथ्यों की परिकल्पना की जाती है। इस प्रकार परिकल्पनाएँ उपलब्ध तथ्यों के आलोक में नए संभावनाओं की ओर देखने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ की गई हैं –

1. पूर्वी सिंहभूम में औद्योगीकरण के पश्चात् कृषि भूमि की उर्वरता में ह्रास रासायनिक उर्वरकों तथा औद्योगिक कचरों के कारण आई है।
2. कृषि भूमि पर उद्योगों की स्थापना से कृषि योग्य भूमि कम होते गए जिसके कारण कृषि उत्पादन कम होता गया।
3. औद्योगीकरण के कारण कृषि गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
4. जिला में औद्योगीकरण के पश्चात् कृषक तथा कृषि श्रमिक आस पास के क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में पलायन करने लगे हैं।
5. औद्योगीकरण कृषि–आर्थिकी को तथा कृषकों के आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर रहा है।
6. औद्योगीकरण के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं जैसे जल प्रदूषण, वायु तथा मृदा प्रदूषण की समस्या तथा कृषि संबंधित समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

7. अनुसंधान अभिकल्प एवं पद्धति :–

पूर्वी सिंहभूम जिला झारखण्ड के वैसे जिलों में शामिल है जहाँ के सभी प्रखण्डों में बड़े उद्योग स्थापित न होने के कारण यहाँ की ग्रामीण जनता कृषि कार्य करती है। मानसून के बाद यहाँ के लोग लघु एवं कुटीर उद्योग से अपनी जीविका चलाते हैं। प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के रूप में पूर्वी सिंहभूम जिला का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह शहर अपने विशिष्ट मौसम एवं जलवायु के लिए तो महत्वपूर्ण है ही साथ ही नगरीय आकारिकी भी अध्ययन क्षेत्र के कृषि भूमि को प्रभावित कर रही है। जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रकार के उद्योग नियंत्रक की भूमिका में है। इस शोध कार्य के लिए पूर्वी सिंहभूम जिला के 05 प्रखंडों के, 05 प्रत्येक के दो–दो गाँवों को अध्ययन की

इकाई बनाया जाएगा। इन प्रखण्डों में जो भी उद्योग, कुटीर उद्योग, कृषि आधारित उद्योगों के कार्य चल रहे हैं प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों के सहारे वैसे प्रखंडों का चयन किया जाएगा। ये चयन यादृच्छिक प्रतिचयन द्वारा किया जायेगा। और आवश्यकता अनुरूप सांख्यिकीय विधियों जैसे सहसंबंध गुणांक, टी–टेस्ट, काई स्क्वायर टेस्ट की सहायता ली जाएगी ।

शोध कार्य के लिए सूचनादाता के रूप में गाँव के किसानों तथा किसान परिवार के प्रमुख का चयन किया जायेगा। साथ ही सरकारी आँकड़ों की सहायता भी ली जायेगी। जिला कृषि विभाग एवं विभिन्न स्वयं सहायता समूहों, संगठनों एवं संस्थाओं से मदद ली जायेगी, शोध कार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा चयनित प्रत्येक गाँव में सर्वेक्षण हेतु प्रतिदर्श आकार के रूप में 03–05 किसान परिवारों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया जायेगा।

संभावित अध्यायीकरण :–

परिचय

- प्रथम अध्याय – भौगोलिक पृष्ठभूमि
- द्वितीय अध्याय – पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण
- तृतीय अध्याय – कृषि भूमि उपयोग एवं वितरण पर औद्योगीकरण का प्रभाव
- चतुर्थ अध्याय – औद्योगीकरण का कृषि भूमि पर प्रभाव
- पंचम अध्याय – औद्योगीकरण का कृषि उत्पादकता पर प्रभाव
- षष्टम अध्याय – औद्योगीकरण का कृषि–आर्थिकी पर प्रभाव
- सप्तम अध्याय – औद्योगीकरण एवं कृषि की समस्याएँ, समाधान, संभावनाएँ एवं नियोजन

निष्कर्ष

संदर्भ सूची

परिशिष्ट

8. आँकड़ों के स्रोत तथा आँकड़े के संग्रहण में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य का स्वरूप वस्तुनिष्ठ विश्लेषणात्मक होगा। जिससे तथ्यों तथा आँकड़ों का सही विश्लेषण किया जा सके। आँकड़ों के सत्यापन एवं विश्लेषण से शोध कार्य को वैज्ञानिकता प्राप्त हो सकेगी।

प्राथमिक आँकड़ों का संग्रहण आवश्यकतानुसार प्रश्नावली, अनुसूची एवं साक्षात्कार विधि के माध्यम से किया जायेगा। इसके अलावा प्रकाशित, एवं अप्रकाशित सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं, सामाजिक रिपोर्टों, सरकारी गजट, सांख्यिकीय प्रकाशनों, ईयरबुक, एवं विभिन्न विकास खण्डों जैसे द्वितीयक आँकड़ों की सहायता ली जाएगी।

9. आँकड़ों का विश्लेषणः–

आँकड़ों का विश्लेषण तालिकाबद्ध रूप से किया जायेगा तथा आरेखीय व आलेखीय विधियाँ प्रयोग में लाई जायेगी। मानचित्र निर्माण में जी.आई.एस. की सहायता ली जाएगी और उन आँकड़ों को प्राप्त कर उनका विश्लेषण भूगोल विषय में प्रयुक्त होने वाले ग्राफों, चार्टों तथा आरेखों के माध्यम से किया जायेगा। इसके लिए एस.पी. एस.एस. की सहायता ली जायेगी।

10. अध्ययन का महत्व :–

किसी भी स्थान में कृषि एवं उद्योग का संतुलित विकास उस स्थान के जनजीवन के संतुलित विकास का सूचक होता है। भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था है। जिसमें कृषि एवं उद्योगों का अपना–अपना विशिष्ट महत्व है। पूर्वी सिंहभूम जिला भारत का एक लघु रूप है। यहाँ भी कृषि के साथ उद्योग का पर्याप्त विकास हुआ है। हाल के वर्षों में निजीकरण एवं उदारीकरण के बाद कृषि पर उद्योगों के हावी होने का खतरा मंडराने लगा है।

प्रस्तावित अध्ययन में पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभाव के परिपेक्ष्य में कृषि प्रारूप एवं जनजीवन के बदलते स्वरूप एवं समस्याओं का अध्ययन विश्लेषण एवं समाधान का प्रयास है। प्रस्तुत शोध कार्य सरकार व आम जनता का ध्यान घटती कृषि भूमि की ओर आकर्षित करेगी। साथ ही घटती कृषि उत्पाद तथा कृषि उत्पादों का महंगा होना जैसी उभरती समस्याओं की तरफ भी ध्यान आकर्षित करना है। कृषि संबंधित समस्याओं तथा कृषकों की समस्याओं की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित कर कृषि के विकास तथा कृषकों के विकास में महत्वपूर्ण कार्य प्रस्तुत करना है। ताकि औद्योगिकीकरण के संदर्भ में कृषि तथा कृषकों की समस्याओं का निदान हो सके।

11. वर्तमान समय की समस्या तथा समाज की आवश्यकता हेतु इसकी प्रासंगिकता :–

पूर्वी सिंहभूम जिला झारखंड के वैसे जिलों में शामिल है जहाँ के सभी प्रखंडों में बड़े उद्योग स्थापित नहीं है। जिस कारण यहाँ की ग्रामीण जनता कृषि कार्य करती है। और चूँकि यहाँ की कृषि मानसून पर आधारित है इसलिए मानसून गुजर जाने के बाद कृषक बेरोजगार हो जाते हैं। वैसी दशा में कृषक लघु एवं कुटीर उद्योगों से अपनी जीविका चलाते हैं। इसके लिए कृषकों तथा ग्रामीण लोगों को आस–पास के नगरीय क्षेत्रों में पलायन करना पड़ता है। जिला के कुछ प्रखण्डों में बड़े उद्योगों की स्थापना न होने के कारण या किसी कारणवश छोटे उद्योगों के बंद हो जाने के कारण बड़ी संख्या में पुरूष आबादी के साथ किसान परिवार को रोजगार के लिए बड़े नगरों एवं महानगरों में मजदूरी के लिए प्रवास करना पड़ता है। जिससे ग्रामीणों की आर्थिक दशा में सुधार नहीं हो पाता है और ग्रामीण जीवन का स्तर निम्न होता जाता है। किसान तथा किसान परिवार स्थायी जीवन यापन नहीं कर पाते हैं। और उनकी जीवन में समस्याएँ बनी रहती हैं।

सम्पूर्ण झारखंड के समस्त जिलों के समान पूर्वी सिंहभूम जिला की भूमि पठारी और कम उपजाऊ है। अतः यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को लघु उद्योग जैसे वन आधारित उद्योग,कृषि आधारित, ग्रामीण अभियंता एवं जैव पर आधारित तथा सेवा पर आधारित उद्योग की जानकारी देना आवश्यक है। जिससे ग्रामीण लोग गरीबी से उबर सके तथा पुरूष आबादी का बड़े नगरों एवं महानगरों की ओर पलायन रूक सके।

प्रस्तुत शोध कार्य से अध्ययन क्षेत्र के कृषि पर औद्योगीकरण के प्रभाव से संबंधित जानकारी जनसंख्याविदों, योजनाकर्ताओं, शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगी। साथ ही उन लोगों को लाभ पहुँचेगा जो कृषि कार्य में लगे हुए हैं। और कृषकों की आर्थिक दशा में भी सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगी। तथा कृषकों के पलायन को रोकने में यह अध्ययन सहायक होगा।

12. वर्तमान ज्ञान में योगदान :–

प्रस्तावित अध्ययन पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभाव के परिपेक्ष्य में विश्लेषण के द्वारा संबंधित जानकारी कृषि तथा कृषकों के बीच संतुलन स्थापित करेगी। यहाँ स्थापित उद्योग का ध्यान बचे हुए कृषि भूमि की ओर आकर्षित करेगी। ताकि वे स्थापित उद्योग कृषि के लिए उपयुक्त तकनीकों का विकास कर सके और आर्थिक संतुलन उद्योग तथा कृषि के बीच सामंजस्य स्थापित कर सके। आयात तथा निर्यात को ग्लोबल रूप प्रदान करेगी जैसे ऑनलाइन रूप में राज्य के सभी जिलों में उत्पादित कृषि सामग्री, साग सब्जी आदि का प्रसार हो सके। बदलते पर्यावरणीय दशा में कृषि का विकास करने में प्रस्तुत शोध सहायक सिद्ध होगा।

13. भविष्य के कार्य :–

प्रस्तावित शोध का शीर्षक पूर्वी सिंहभूम जिला में औद्योगीकरण का कृषि पर प्रभाव है। जिसका विश्लेषण कर भविष्य में शोधकर्ता इस तरह के मिलते जुलते शीर्षक का चयन कर शोध कार्य करके हमारे देश और राज्य के विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते है। जैसेः–

- पूर्वी सिंहभूम जिला में कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगः एक भौगोलिक अध्ययन
- पूर्वी सिंहभूम जिला के औद्योगिक एवं कृषि के विकास में जनजातियों की भूमिकाः एक भौगोलिक अध्ययन
- पूर्वी सिंहभूम जिला के बड़े एवं छोटे औद्योगिक इकाईयों का पर्यावरण पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन
- पूर्वी सिंहभूम जिला में कृषि उत्पादकता का बदलता स्वरूपः एक भौगोलिक अध्ययन
- पूर्वी सिंहभूम जिला के आर्थिक विकास में उद्योगों की भूमिकाः एक भौगोलिक अध्ययन आदि

संदर्भ सूची :–

1. तिवारी राम चंद्र एवं सिंह ब्रह्मानंद, (2016), ''कृषि भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृष्ठ– 32
2. तिवारी राम चंद्र एवं सिंह ब्रह्मानंद, (2016), ''कृषि भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृष्ठ– 32
3. तिवारी राम चंद्र एवं सिंह ब्रह्मानंद, (2016), ''कृषि भूगोल'' प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृष्ठ– 32
4. तिवारी राम कुमार, (2016), राँची जिला में शस्य गहनता का वितरण प्रतिरूप, ज्योग्राफिकल आउटलुक, वोल्युम XXIV, पृष्ठ– 114
5. तिवारी राम कुमार, (2016)ः सतत विकास हेतु झारखण्ड के उद्योग एवं खनिज संपदा में स्थानीय निवासियों की सहभागिता, ज्योग्राफिकल आउटलुक, वोल्युम XXIV, पृष्ठ– 122

सिन्हा विजय (2016) ''झारखण्ड सामान्य ज्ञान'', अरिहंत पब्लिकेशन, इंडिया लिमिटेड, पृष्ठ सं.–57, 66

सिंह जगदीश (2017) ''आर्थिक भूगोल के मूल तत्व'', ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ सं.– 217, 238

राव वी.पी. (1998) ''भारत एक भौगोलिक समीक्षा'', वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ सं.– 89, 133

तिवारी राम चंद्र (2000) ''कृषि भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृष्ठ सं. – 98, 142

महतो ब्रजेश कुमार, (2010), ''झारखण्ड का प्रादेशिक भूगोल'' साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा पृष्ठ सं. –106–110

तिवारी राम कुमार (2016), ''झारखण्ड की रूपरेखा'', शिवांगन पब्लिकेशन, राँची पृष्ठ सं. –348–371

लोढ़ा, राजमल एवं माहेश्वरी दीपक (2012), ''औद्योगिक भूगोल राजस्थान'', हिंदी ग्रंथ आकादमी जयपुर पृष्ठ सं. – 530–539

https;//Jamshedpur.nic.in

https;//www.jharkhand.gov.in

Jharkhand census : https://www.censusindia.co.in/state/Jharkhand

Jharkhand Government : https://jharkhandminerals.gov.in